UGC CARE LISTED
ISSN NO. 2394-5990

संशोधक

• वर्ष : ९२ • मार्च २०२४ • पुरवणी अंक ३०

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे

Dr. Ravindra Patil

UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

।। संशोधक।।

पुरवणी अंक ३० – मार्च २०२४ (त्रैमासिक)

- शके १९४५
- वर्ष : ९२
- पुरवणी अंक : ३०

संपादक मंडळ

- प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे
- प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
- प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा
- प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक

- प्रो. दत्तात्रय लक्ष्मण येडले
- डॉ. सुरेश माधवराव मुंढे
- डॉ. अश्विन पुरुषोत्तम रांजणीकर

*** प्रकाशक ***

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१
दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७१, ९४०४५७७०२०
Email ID : rajwademandaldhule1@gmail.com
rajwademandaldhule2@gmail.com

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

अंक मूल्य रु. १००/-
वार्षिक वर्गणी (फक्त अंक) रु. ५००/-, लेख सदस्यता वर्गणी : रु. २५००/-

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने
'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, पुणे.

टीप : या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

२९. धर्मवीर भारती के उपन्यासों में मध्यवर्गीय अभिव्यक्ति
- 1) पंकज विश्वकर्मा, 2) डॉ. निशात बानो ---------- १२८

३०. वैश्वीकरण, बाजार और आज का भारतीय समाज
- लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील ---------- १३१

३१. भारतीय साहित्य और विविध विमर्श
- प्रा. सौ.सावित्री सूर्यकांत मांढरे ---------- १३५

३२. तृतीय प्रकृति समुदाय के अंतरंग जीवन की मार्मिक गाथा : यमदीप
- 1) अनिल रोडु अहिरे, 2) डॉ. अशोक शामराव मराठे ---------- १३९

३३. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श
- 1) जगताप अर्चना तुळशीराम 2) डॉ. दत्तात्रय येडले ---------- १४३

३४. पर्यावर्णीय चेतना
- इंदिरा.वी ---------- १४६

३५. बेबी कांबले की आत्मकथा 'जीवन हमारा'में व्यक्त दलित चेतना
- प्रा. कापावार. व्ही.डी. ---------- १४९

३६. नेपाली लोक साहित्य के हिंदी में अनुवाद की समस्याएँ
- 1) कृतिका विश्वकर्मा, 2) प्रो.संजय कुमार ---------- १५२

३७. विनोद बब्बर का व्यक्तित्व एवं कृतीत्व
- 1) खान फेरोज अजीज, 2) डॉ. दस्तगीर एस. देशमुख ---------- १५५

३८. भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद की जरूरत
- डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा ---------- १५९

३९. समकालीन साहित्य में पर्यावरणीय चिन्तन
- डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ---------- १६५

वैश्वीकरण, बाजार और आज का भारतीय समाज

लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर
(महाराष्ट्र) 416003
ई-मेल :rcpatilshahu@gmail.com, मो.9552564248

शोध सार :

शीत युद्ध के बाद विकसित देशों की एक मंडली बनी। इसका नेतृत्व अमरिका ने किया। परिणामत: पूरी दूनियाँ को बाजार बनाने की प्रक्रिया चली इसका यथार्थ चित्रण इक्कीसवीं सदी के हिंदी कविताओं में हुआ है। वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण भारत कुछ क्षेत्रों में शिखर पर पहुँच गया। वैश्वीकरण के कारण सूचना प्रौद्योगिकी, बैकिंग, फार्मा क्षेत्र वस्त्रउद्योग, चमडा उद्योग, कृषि आदि क्षेत्रों को लाभ पहुँचा है। वैश्वीकरण के बूरे परिणामों के कारण भारतीय संयुक्त परिवारों का तेजी से विघटन हो रहा है। शहरों मे सिनिअर सिटीझन कॉलनी, वृद्धाश्रम, नाना-नानी पार्क तथा बेबी केअर सेंटरों की संख्या दिन-ब-दिन बढती ही जा रही है। प्राकृतिक धरोंहरों पर आंतरराष्ट्रीय कंपनियों की वक्रदृष्टि बनी हुई है। मल्टी नॅशनल कंपनियों ने पानी को भी अपने व्यापार का साधन बनाया है। आधुनिकता और वैश्वीकरण के चलते हमारी मूल पहचान लोकसंस्कृति धुँधली होती जा रही है। वैश्वीकरण के कारण गलाकाट प्रतियोगिता का दौर शुरू हुआ है। इसमें स्वदेशी चीजों को गुणवत्ताहीन बताया जा रहा है। प्रस्तुत कविओं में पूँजीवादी देशों द्वारा कम विकसित देशों में बाजारवाद को जन्म देना और अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की बात का यथार्थ चित्रण है। विज्ञान और तकनिकी विकास ने दुनिया को 'ग्लोबल व्हीलेज' बना दिया है। सीनेमा, मोबाईल,संचार माध्यमों, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद आदि का घातक प्रहार मानवी मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति पर हो रहा है।

शोध विषय :

अमरिका और सोवियत युनियन के बीच लंबे समय तक चले शीत युद्ध के बाद पूरी दुनिया को एकही बाजार बनाने की प्रक्रिया बडे तेजी से चली। इसी दौरान अमरिका के नेतृत्व में विकसित पूँजीपति राष्ट्रों की मंडली बनी। आगे चलकर इसी मंडली ने पूरी दुनिया में अपने हाथ-पैर पसारे और दुनिया का नेतृत्व भी किया। पूरी दुनिया को बाजार बनाने की प्रक्रिया को वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण कहा गया। वैश्वीकरण के परिभाषा के संदर्भ में डॉ. इंद्रा जैन लिखती है, वैश्वीकरण का अर्थ विश्वस्तर पर सभी देशों के परस्पर आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय सहयोग का विकास करना है। लेकिन उसका आज जो स्वरूप उभरकर आ रहा है। उसका सीधा अर्थ है पूँजीवादी देशों द्वारा कम विकसित देशों में बाजारवाद को जन्म देना है और अपनी अर्थव्यवस्था को मजबुत करना है।[1]

वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों महत्त्वपूर्ण पहलूओं का चित्रण इक्कीसवीं सदी के हिंदी कविताओं में स्पष्ट रूप से हुआ है। जिसमें जनसंचार माध्यम और भारतीय संस्कृति, आर्थिक विषमता की स्थिति, पारंपारिक शिक्षाव्यवस्था पर हावी होती विदेशी शिक्षा व्यवस्था मॉल संस्कृति का उदय, संयुक्त परिवारों का विघटन, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ पेंटेंट और भारतीय किसान, प्राकृतिक धरोहरों पर राष्ट्रीय आंतरराष्ट्रीय कंपनियों की वक्रदृष्टि, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद और भारतीय संस्कृति आदि महत्त्वपूर्ण बिंदू सम्मिलित है।

1) संयुक्त परिवारों का विघटन :

वैश्वीकरण के अच्छेबूरे परिणामों के कारण भारत कुछ क्षेत्रों में शिखर पर पहुँच हुआ दिखाई देता है। सुचना प्रौद्योगिकी, फार्मा, रसायन, वस्त्रउद्योग, चमडा उद्योग, कृषि आदि क्षेत्रों में शिखर पर पहुँच गया। आज युवाओं में बेरोजगारी बढ़ रही है। परिणामत: वे निराश है। नौकरी और करिअर के नाम पर बेहताशा दौंड़ रही है। भौतिक सुख सुविधाओं में मग्न है। वह अपनी सांस्कृतिक धरोहर संयुक्त परिवार से करता जा रहा है। शहरों में दिन-ब-दिन 'सिनिअर सिटिझन' कॉलनी, वृद्धाश्रम, नाना-नानी पार्क, बेबी केअर सेंटरों की संख्या बढ़ती जा रही है, इससे इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता अछुती नहीं है। वैश्वीकरण के परिणामों के संदर्भ में एकांत श्रीवास्तव लिखते है,

यहाँ थोडे से लोग विक्रेता हैं बाकी सब क्रेता है,
बाकी सब में बहुत से लोग क्रेता भी नहीं है
जो क्रेता नहीं यानी जिनकी जेबे खाली है,

ISSN No. 2394-5990

वे बाजार के वृत्त से बाहर है
चढ गई है किमते चिजों के आकाश में
गिर गया है आदमी का बाजार भाव।[2]

प्रस्तुत काव्य पंक्तियों के माध्यम से पूँजीवादी व्यवस्था के कारण किस प्रकार समाज में आर्थिक विषमता की स्थिति निर्माण हुई है इसका चित्रण कवि ने किया।

2) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ पेंटेट और भारतीय किसान :

वैश्वीकरण के कारण भारतीय कृषि क्षेत्र में नए-नए तंत्रज्ञान का विकास हुआ। परिणाम के चलते उत्पादकता काफी मात्रा में बढी, परंतु जो सफलता मिलनी चाहिए थी वह नहीं मिली। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारतीय बाजारों में प्रवेश किया। अपने-अपने नाम की डंका बजाया। साजिश के तहत अलग-अलग चिजों का पेंटेंट बनाकर रजिस्टर करके रखा जा रहा है। इसमें उनकी बहुत बडी साजिश नजर आती है। इसके संदर्भ में 'संजय कुंदन की बासमती चावल' कविता की कुछ पंक्तिया दृष्टव्य है,

विजेता आयेंगे और हमे जीतकर जाएँगें
तब तुम अपने खेत की एक मुठ मिठ्ठी दे सकोगे हमें
वे हमें ले जाएँगे अनजान मंदियो में
फिर बिकने आऐंगे तुम्हारे ही घर
गले में विचित्र नाम का पट्टी डाले
तब कैसे लगेगा तुम्हें।[3]

3) संचार माध्यम और भारतीय संस्कृति :

जनसंचार माध्यम संचार का सबसे प्रभावी साधन है। इसका बाजार व्यवस्था से बहुत गहरा संबंध है। मोबाईल, टी.व्ही., रेडिओ, समाचार पत्र, संगीत मैफिल आदि जनसंचार के प्रमुख साधन है। बच्चों से लेकर बुढों तक इससे काफी प्रभावित है। इसके अच्छे-बूरे परिणाम वर्तमान समाज में होता हुआ स्पष्ट दिखाई देता है। मीडिया में दिखाए जानेवाले विज्ञापन पूँजीपतियों या बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा निर्मित होते हैं। इन विज्ञापनों में स्त्री को अधिक महत्व दिया गया है। इसके संदर्भ में कवि नौमान शौक अपनी कविता की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं,

अप्सराएँ आ रही हैं और जा रही हैं
जिस्म पर कपडे का एक बारीकसा इल्जाम लेकर
रैंम्प पर जारी इनका कैतट वाक
टेलीविजन पर निगाहों को थामें
मेरा दो साल का बेटा अपने हाथों मेंरिमोट लिए बैठा है।[4]

प्रस्तुत काव्य पंक्तियों के माध्यम से कवि ने जन-संचार माध्यम के साधनों का बुरा असर आज की पीढी पर किस प्रकार हो रहा है इसका चित्रण किया है।

4) प्राकृतिक धरोहरों पर राष्ट्रीय-आंतरराष्ट्रीय कंपनियों की वक्रदृष्टि :

वैश्वीकरण के परिणाम के चलते भारत मेंराष्ट्रीय एवं आंतरराष्ट्रीय कंपनियों ने अपनी जडें अधिक मजबुत कर ली है। परिणामत: बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अलग-अलग प्राकृतिक साधन को भी नहीं छोडा है। वे प्रकृति से निर्मित साधनों को व्यापार की चिजें बना रहें हैं। अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने पानी को भी व्यापार का साधन बनाकर बाजार में अच्छे दामों बेच रहे हैं। इन कंपनियों ने दूनिया भर की पानी को खरीदकर लोगों की प्यास पर एकाधिकार स्थापित किया है। वर्तमान समय में लोग सार्वजनिक जल संस्था को अतीत की बात मान रहे हैं। हर कोई बोतलबंद पानी पीने के लिए विवश है। इसके संदर्भ में कमलेश्वर साहू के ङ्कपानी को बेचने से पहलेफ कविता के कुछ काव्य पंक्तिया दृष्टव्य है,

पानी को बेचने से पहले
मछलियों को पूछा जाना चाहिए था
और नहीं तो पूछ लेना चाहिए था, पानी से ही
पानी को बेचने से पहले,
पूछा गया देश-विदेश के पूँजीपतियों से,
बिचौलियों से व्यापारियों से उद्योग पतियों से
पानी को भी पता नहीं चला अपना बिकना।
अपना बेचना अपना गुलाम होना।[5]

5) सांस्कृतिक साम्राज्यवाद और भारतीय संस्कृति :

वैश्वीकरण के कारण भारतीय संस्कृति अंग खान-पान वेशभूषा, रहन-सहन आदि संस्कृति के अंगों पर पाश्चात्य संस्कृति का बहुत प्रभाव पडा है। वैश्वीकरण के बूरे परिणामों के कारण भारत की संस्कृति अर्श से फर्श पर पहुँची हुई दिखाई देती है।संचार माध्यमों का बुरा असर 'संस्कृति' और जीवन मूल्यों पर हो रहा है 'सर्वे भवंतु सुखि' के स्थान पर गलाकाट प्रतियोगिता का दौर शुरू हो चुका है। आज विदेशी चिजों का प्रभाव इतना हो चुका है कि स्वदेशी चीजों को गुणवत्ताहीन बताया जा रहा है। कवि बोधिसत्त्व की कविता 'लाल भारत' की पंक्तियाँ प्रस्तुत है,

धीरे-धीरे उठान हुआ
लाल भात का
पहले थाली से, फिर रसोई से
अहदन से, फिर कोठिला से,जहाँ रखे जाते थे।
फिर खेत से....। दुल्हनों, नव ब्याहताओं की
कोंछ से.....।
उस न महकनेवाले काले से

चावल की,
उस खुरदुरे अन्न की जगह
आए धीरे-धीरे महकनेवाले
सफेद भुरभुरे चावल....।
जैसे उच्छिन हुआ लाल भात
वैसे ही कहीं खो गए छोटे-छोटे
देसी बैल.....खो गए कहीं
कम दूध देनेवाली उनकी माँए ....
खराब नस्लवाली कपिला, कृष्णा...
जैसे लाल भात गया थाली से अदहन .....
रसोई से कोठिला से खेत से....। नवब्याहताओं
दुल्हनों के कोंछ से भी.....।[6]

5.1 लोकसंस्कृति के बदलते संदर्भ :

आधुनिकता और वैश्वीकरण का लोकसंस्कृति पर भारी मात्रा में असर हुआ है। वैश्वीकरण के कारण भारतीय संस्कृति की मूल पहचान लोकसंस्कृति अधिक धूँधली होती जा रही है। देहातों से भारतीय संस्कृति गायब हो रही है और वहाँ पर इंडिया की संस्कृति पनप रही है। वैश्वीकरण का सीधा प्रभाव लोकजीवन पर हो रहा है।सहन-सहन, वेशभूषा, आभूषण, खान-पान, लोकगीत, लोककथा, लोकनृत्य, लोकगाथा, लोकनाट्य आदि सभी लोकसंस्कृति के अंगे पर प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

6) आर्थिक विषमता की स्थिति :

वैश्वीकरण के परिणाम के चलते पूँजीपति और अन्य लोगों की आर्थिक स्थिति में काफी विषमता दिखाई देती है। पूँजीपति पूरे विश्व को केंद्र बनाकर अधिक धनवान होते जा रहे है। वहीं दूसरीऔर गरीब मंजदूरों की स्थिति अधिक दयनीय होती जा रही है। समाज के मध्यम एवं गरीब लोग पूँजीपतियों के हाथों की कटपुतली बने हुए है। वैश्वीकरण के इस दौर ने आर्थिक और सामाजिक हलचलों से कवि मन को प्रचुर मात्रा में सामग्री उपलब्ध कराया है। कवि वैश्वीकरण के वास्तविकता को उद्घाटित करने के लिए लिखते हैं,

और मैं सोचने लगा
की दो रुपये का आलू
कैसे हो जाता है एक सौ का अंकल चिप्स?
क्या वहीं से आया डंकल
जहाँ से आए थे अंकल जी।[7]

7) पारंपारिक शिक्षा व्यवस्था पर हावी होती अंग्रेजी :

वैश्वीकरण का भारी प्रभाव भारतीय पारंपारिक शिक्षा व्यवस्था पर हुआ है। वैश्वीकरण के परिणाम के चलते आज की शिक्षा करिअर ओरिंटेड बनी हुई है। परिणामत: पारंपारिक शिक्षा व्यवस्था कमजोर हो रही है। इंजिनिअरिंग, मेडिकल जैसे टेकनॉलॉजी से संबंधित शिक्षा पारंपारिक शिक्षा पर हावी हो रही है।बहुराष्ट्रीय कंपनियों का सारा कार्य, व्यापार अँग्रेजी में हो रहा है।इसके परिणाम के चलते हर कोई अपनी मातृभाषा को संदेह की नजर से देख रहा है।

8) मॉल संस्कृति का उदय :

मॉल संस्कृति की नींव ही वैश्वीकरण की देन है। मॉल्स वर्तमान समय में सबसे बडे व्यापार के केंद्र बने हुए हैं। मॉल संस्कृति के कारण पारंपारिक छोटे-मोटे व्यापारियों की स्थिति अधिक कमजोर होती जा रही है। आज लोग चक्काचौंध मॉल्स के भक्त बने हुए हैं। वे जरुरत से ज्यादा चिजों को खरिदने के होड में लगे हुए हैं। इनमें भौतिक सुख सुविधाओं से संबंधित चिजें भारी मात्रा में है।

निष्कर्ष :

शीत युद्ध के बाद विकसित देशों की एक मंडली बनी। इसका नेतृत्व अमरिका ने किया। परिणामत: पूरी दुनिया को बाजार बनाने की प्रक्रिया चली इसका यथार्थ चित्रण इक्कीसवी सदी के हिंदी कविताओं में हुआ है। वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण भारत कुछ क्षेत्रों में शिखर पर पहुँच गया तो कुछ क्षेत्रों में निचले पायदान पर चला गया। वैश्वीकरण के कारण सूचना प्रौद्योगिक, बैंकिंग, फार्मा क्षेत्र वस्त्रउद्योग, चमडा उद्योग, कृषि आदि क्षेत्रों को लाभ पहुँचा है। वैश्वीकरण के बूरे परिणामों के कारण भारतीय संयुक्त परिवारों का तेजी से विघटन हो रहा है। शहरों में ङ्गसिनिअर सिटीझनफ कॉलनी, वृद्धाश्रम, नाना-नानी पार्क तथा बेबी केअर सेंटरों की संख्या दिन-ब-दिन बढती ही जा रही है। प्राकृतिक धरोहरों पर आंतरराष्ट्रीय कंपनियों की वक्रदृष्टि बनी हुई है। मल्टी नॅशनल कंपनियों ने पानी को भी अपने व्यापार का साधन बनाया है। आधुनिकता और वैश्वीकरण के चलते हमारी मूल पहचान लोकसंस्कृति धुँधली होती जा रही है। वैश्वीकरण के कारण गलाकाट प्रतियोगिता का दौर शुरू है।प्रस्तुत कविता में पूँजीवादी देशों द्वारा कम विकसित देशों में बाजारवाद को जन्म देना और अपना अर्थव्यवस्था को मजबुत करने की स्थिति का चित्रण हुआ है। विज्ञान और तकनिकी विकास ने दुनिया को ङ्गग्लोबल व्हीलेजफबना दिया है। सीनेमा, मोबाईल संचार माध्यमों, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद आदि का घातक प्रहार मानवी मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति पर हो रहा है।

ISSN No. 2394-5990

संदर्भ संकेत :

1) स. नवीन नंदवाना, 'समकालीन कविता विविध विमर्श', अमन प्रकाशन कानपुर, प्रथम सं. 2014, पृ. 213
2) एकांत श्रीवास्तव, 'बाजार', हंस पत्रिका अगस्त, 2023
3) संजय कुंदन, 'बासमती चावल', वाक 4, पृ. 179
4) नौमान शौक, 'फैशन शौ', 'वागार्थ', दिसंबर, 2003
5) कमलेश्वर साहू, 'पानी को बेचने से पहले', 'हंस', दिसंबर, 2007
6) बोधीसत्व, झ्लाल भारतफ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण, 2010, पृ. 79-80
7) दिनेश फुशवाह, हंस, सितंबर, 1994, पृ. 50